राजस्थानी चित्रकला को समृद्ध करती मेवाड शैली

14

ख्याति सिंह*

प्रकृति की अकूत सम्पदा लिए मेवाड़ रियासत अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। मेवाड़ राज्य के शासक वल्लभ सम्प्रदाय के अनुयायी थे। मेवाड़ में श्री कृष्ण की पूजा अर्चना हुई और उनके विभिन्न रूपों को चित्रों के माध्यम से चित्रित किया गया। मेवाड़ में श्री कृष्ण के श्रीनाथ रूप की और गोवर्धनधारी रूप की पूजा होती है। मेवाड़ प्रदेश का विस्तार अधिक होने से धार्मिक विषयों में विविधता रही है और यही विविधता चित्रों में भी दृष्टिगोचर होती है। जैसे– रामायण, महाभारत, भागवत् पुराण आदि ग्रंथों से सम्बन्धित विषयों पर बने चित्रों के अतिरिक्त कृष्ण के सभी रूपों का अंकन प्रधान रहा है। साथ ही एकलिंग जी (शिवजी) की उपासना के दृश्य तथा विभिन्न देवी–देवताओं का अंकन प्रमुख है। यहाँ–जहाँ एक ओर कृष्ण भक्ति का केन्द्र रहा है वहीं इनमें कला रस की ऐसी धारा प्रवाहित हुई कि सम्पूर्ण राजस्थान ही जैसे सरोबार हो गया और इस धारा में सबको सम्मोहित करने की असीम शक्ति है।

लोक कला की रूक्षता, रेखाओं व रंगों का मोटापन व भारीपन मेवाड़ शैली की निजी विशेषता रही है। मेवाड़ शैली में उत्कृष्ट चित्रों के अंकन में रेखाओं का उचित निर्वाह किया गया है। लघु चित्रों में रेखाएँ कहीं गहरी, कही पतली, कहीं हल्की व मोटी छाया प्रकाश व्यक्त करती है। तो कहीं बारीक आकर्षण को लिए अपनी गति के साथ आशा–निराशा, मिलन–विरह, मन्दता–तीव्रता आदि को प्रदर्शित करती है। साथ ही आकार के सीधी व घुमावदार प्रतीकात्मक रूपों के साथ विलीन हो जाती है। सफेद पृष्ठभूमि पर अपना रंग संयोजन जिस मात्रा में होना चाहिए, रेखा के माध्यम से ही गति प्रवाहित कर चित्र की आत्मा बन जाती है। विस्तृत रूप में देखा जाए तो एक मोटी रेखा का सूक्ष्म भाग आकार बन जाता है और रेखा पर ही आकार अधिक आश्रित रहता है।

मेवाड़ के चित्रों में मूल आकार को आकाश, जमीन, पहाड़, पानी, वृक्ष, प्रसाद आदि की पृष्ठभूमि देकर भावों के अनुसार चित्रित कर चित्रण को प्रभावपूर्ण बनाया है। मानवाकृतियों में नाक विशेष तीखी, गोल चेहरे, आँख सरल मछली जैसी, छोटे कद की स्त्रियाँ किन्तु आकर्षक वक्ष स्थल एवं वस्त्रों के सरल अंकन उनके सौन्दर्य को बढ़ाते हैं। प्रारम्भिक मवोड़ी चित्रों में आकृतियाँ अपभ्रंश का प्रभाव लिए हुए है। आकृति में अधिक गम्भीरता, भारीपन व उत्साह की भावना है। स्त्रियाँ आकार में कुछ छोटी बनाई गई है।

पश्चिमी भारतीय चित्र शैली में बनी मृरवाकृतियों में एक चश्मी चेहरे से निकलती हुई परली आँख का अंकन हटाते ही मेवाड़ चित्रशैली का स्वरूप निर्धारित होता है। मेवाडी चित्रों में प्रारम्भ में ये चेहरे पूर्णतया एक चश्मी रहे किन्तु बाद में ये धीरे–धीरे ड़ेढ चश्मी, सवा चश्मी तथा दो–चश्मी चित्रित होने लग गये थे।

* *शोधार्थी, आर०जी०पी०जी० कॉलिज, मेरठ*

मकान, महल, सन्यासी, साधु, राजा–रानी, ईश्वर, दासी, भिखारी, सांमत, पुजारी, दरबारी आदि सभी का अंकन किया गया है। राजा का आकार अन्य आकृतियों से बड़ा है क्योंकि समाज में राजा का स्थान ऊँचा है। छोटे वर्ग के लोगों को राजा की अपेक्षा छोटा प्रस्तुत किया है। मेवाड़ के चित्रकारों ने रेखाओं, रंगों और तूलिका के द्वारा चित्रों में आत्मा को प्रतिष्ठित कर दिया है। जीवन के सभी रसों की अभिव्यक्ति इस शैली के चित्रों में हुई है।

मेवाड शैली में चित्रित चित्र सम्पुटों में स्त्री–पुरुष, साज–सज्जा में बिन्दियाँ, भृकुटियों के बीच सम्प्रदाय की छाप को दर्शाने के लिए अंग राग टीका या तिलक का प्रयोग, हाथ–पैरों की अगुलियों पर मेंहदी, सिर पर रत्नजड़ित या गोटेदार पगड़ी, कानों में बालियाँ, चादरा, शाल, दुशाला, अंगरखा तथा जामा एवं दरबारी पोशाक थी जिसमें कोट नीचे तक झूलता हुआ है। कृष्ण का पीला अधोवस्त्र (पीताम्बर), टोपी व लंगोटी लिए तथा ऋषि–मुनियों को सूक्ष्म अधोवस्त्र के साथ चित्रित किया है। किसानों व मध्यमवर्गीय लोगों की आकृतियों में एक लम्बा घेरदार व तानीदार कोट चित्रित होने लगा तथा चाकदार जामा का प्रचलन चित्रों में ज्यो का त्यों रहा है। चोली, अंगियाँ, दृपट्टा, सारी, औढणी, चादर, लंहगा, घाघरा आदि वस्त्रों के निश्चित रूप नारी चित्रों में मिलता है।

मेवाड़ शैली में दरबारी चित्रों में विषयों की विविधता है। मेवाड़ में रासिकाष्टक में ऋतुओं के आधार पर नायक–नायिका को, रसिक प्रिया के पदों के आधार पर राध ाा–कृष्ण को चित्रित किया है। मेवाड़ के प्राचीन ग्रंथों में श्रावक प्रतिक्रमण सूत्रचूर्णि, कल्पसूत्र, सुपासनाहचरियम्, ज्ञानार्णाव, रागमाला, रासिकाष्टक, गीत–गोविन्द, बिहारी सतसई रासिकाप्रिया, ढोला मारू री चौपाई, रामायण, भागवत् पुराण आदि ग्रंथों के विशयों पर भी चित्रण कार्य हुआ है। मेवाड़ में सचित्र ग्रंथ अधिक है लगभग सभी ग्रंथों में चित्र बने है या उनके विषय से सम्बन्धित चित्र बने है। ग्वालों के मेवाड़ शैली में 1628 ई० में बना मारू राग–रागिनी चित्र में ढोला मारू ऊँट पर सवार एक दूसरे को निहार रहे हैं। चित्र में कोमल व लयात्मक रेखाकंन जिससे चित्र में गति है। लगभग 1700 ई० में मेवाड शैली में बिहारी सतसई पर बना मुरली मनोहर कृष्ण नामक चित्र में कृष्ण बाँसुरी बजाते हुए, राधा नृत्य करते हुए एवं गोपियाँ कृष्ण को निहारते हुए चित्रित है। आकाश में काले घने बादल व चमकली बिजली अत्यन्त सुन्दर लग रही है।

मेवाड़ में 15वी सदी से राग–रागनियों के चित्रों का प्रारम्भिक स्वरूप दृष्टिगत होता है। मेवाड़ में राग–रागनियों से सम्बन्धित चित्रों का निर्माण अन्य विषयक चित्रों की भांति भरपूर हुआ है। मेवाड़ में ऋतु विषयक चित्रों से सम्बन्धित बारहमासा, रसिकोष्टक, शट्ऋतु आदि ग्रंथों का चित्रण हुआ है।

राजस्थानी शैलियों में मेवाड़ का अपना एक विशेष स्थान रहा है। प्रारम्भिक मेवाड़ शैली पर जैन गुजरात व अपभ्रंश शैलियों का प्रभाव दिखाई पड़ता है, परन्तु मेवाड़ का स्वतंन्त्र प्रारूप अपनी निजी विशेषताओं के कारण ही अन्य राजस्थानी शैलियों में अपना अलग स्थान बनाये हुऐ है। लाल, हरे और पीले रंगों का प्रयोग तथा तड़क–भड़क रहित सरल भावमय चित्रण मेवाड शैली में उल्लेखनीय है।

सन्दर्भ सूची :

1. *मेवाड़ की चित्रांकन परम्परा– डा० आर० के वशिष्ट– 1984*
2. *राजस्थानी रागमाला चित्र परम्परा डा० महेन्द्र कुमार शर्मा 'सुमहेन्द्र' 1990*
3. *भारत की चित्रकला–रायकृष्ण दास*
4. *राजस्थानी चित्रकला–रामगोपाल विजयवर्गीय*
5. *मेवाड पेंटिग, डा० मोतीचन्द्र 1960*